लौकी

लौकी एक मोनोइशियस पादप है अर्थात् नर व मादा पुष्प एक ही बेल पर अलग –अलग आते हैं। इनके परागण की क्रिया मुख्य रूप से कीटों द्वारा होती है।

जलवायु :-

इनकी बेलों की अच्छी वृद्धि 25 से 30 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान पर होती है। इन पर पाले का प्रभाव बहुत अधिक होता है। इनके लिये उपजाऊ दोमट भूमि जहां पानी का निकास अच्छा हो उत्तम होती है इनकी खेती गर्मी और वर्षा ऋतु में की जाती है।

उपयुक्त किस्में :-

पूसा नवीन :- इसके फलों की लम्बाई 40 से.मी. एवं भार 350–400 ग्राम होता है। फलों का रंग हरा, उपज 250–300 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती है।

यु. एस.एम. श्रवण :–इसके फलों की लम्बाई 30 से.मी. एवं भार 350 ग्राम, रंग हल्का हरा होता है। इसकी उपज 300–320 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक होती है।

बुवाई का समय

बुवाई ग्रीष्म कालीन फसल के लिये फरवरी – मार्च व वर्षा कालीन फसल की जून–जुलाई में करना उचित है।

बीमारियों की रोकथाम के लिये बीजों को बोने से पूर्व कार्बेण्डाजिम 2 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बोना चाहिये।

बुवाई का समय इस बात पर भी निर्भर करता है कि इन सब्जियों की बुवाई नदी पेटे में की जा रही है या समतल भूमि पर। अगेती फसल लेने के लिये निम्न उपाय अपनाये जा सकते हैं।

चूंकि बीजों का अंकुरण 20 डिग्री से कम तापमान पर ठीक प्रकार से नहीं हो पाता है। अतः बीजों को सीधे खेत में न बोकर प्लास्टिक की थैलियों में बोया जा सकता है। थैलियों में 1/3 भाग चिकनी मिट्टी, 1/3 भाग बालू व 1/3 भाग मींगनी या गोबर की खाद मिला कर एक थैली में दो बीज को बोया जा सकता है। थैलियों में रखें बीजों की झारे से सिंचाई करें। वातावरण गर्म बनाये रखने के लिये रात के समय थैलियों को पोलीथिन से

ढ़क देवें। उपयुक्त तापमान होने पर तैयार खेत में स्थानान्तरण करें।

सीधे खेत में बोने के लिये बीजों को बुवाई से पूर्व 24 घण्टे पानी में भिगोवें बाद में टाट में बांध कर 24 घण्टे रखें। उपयुक्त तापक्रम पर रखने से बीजों की अंकुरण की प्रक्रिया गतिशील हो जाती है। इसके बाद बीजों को खेत में बोया जा सकता है इससे अंकुरण प्रतिशत बढ़ जाता है।

खाद एवं उर्वरक

गोबर की खाद	200 से 250 क्विंटल प्रति हैक्टेयर
नत्रजन	80 से100 किलो प्रति हैक्टेयर
फॉस्फोरस	40 किलो प्रति हैक्टेयर
पोटाश	40 किलो प्रति हैक्टेयर

देशी खाद, फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा तथा नत्रजन की 1/3 मात्रा अर्थात 30 किलो नत्रजन बुवाई के समय भूमि में मिलाकर देवें तथा शेष नत्रजन की मात्रा को दो बराबर भाग में बांटकर टोप ड्रेसिंग (खड़ी फसल में) के रूप में प्रथम बार बुवाई के 25 से 30 दिन बाद व दूसरी बार फूल आने के समय देना चाहिये।

बीज की मात्रा, बुवाई का समय व दूरी

क्र.सं.	बीज की मात्रा किग्रा/हैक्टेयर	बुवाई का समय	दूरी(कतार X पौधा)
1.	4–5	फरवरी–मार्च जून–जुलाई	2.5–3X0.75 मीटर

प्रमुख कीट

लाल भृंगः-

यह कीट लाल रंग का होता है तथा अंकुरित एवं नई पत्तियों को खाकर छलनी कर देता है। इसके प्रकोप से कई बार पूरी फसल नष्ट हो जाती है।

नियन्त्रण हेतु ऐसीफेट 75% एस पी आधा ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़कें एवं 15 दिन के अन्तर पर दोहरावें।

बरूथी

बरूथी पत्तियों की निचली सतह पर रहकर रस चूसती है। इससे पत्तियों पर प्रारम्भ में सफेद धब्बे बनते हैं, जो बाद में भूरे रंग के हो जाते हैं। परिणाम स्वरूप पौधों में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया बुरी तरह प्रभावित होती है। नियंत्रण हेतु इथियॉन 50 ईसी 0.6 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर जून के द्वितीय सप्ताह में छिड़कें।

प्रमुख व्याधियां

तुलासिता (डाउनी मिल्ड्यू)

पत्तियों की ऊपरी सतह पर पीले धब्बे दिखाई देते हैं और नीचे की सतह पर कवक की वृद्धि दिखाई देती है। उग्र अवस्था में रोग ग्रसित पत्तियां झड़ जाती है।

नियन्त्रण हेतु मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव करें। आवश्यकता पड़ने पर इस छिड़काव को 15 दिन बाद दोहरावें।

झुलसा (ब्लाइट)

इस रोग के प्रकोप से पत्तियों पर भूरे रंग की छल्ले दार धारियां बन जाती है।

नियन्त्रण हेतु मैन्कोजेब या जाईनेब 2 ग्राम या जाईरम 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें आवश्यकतानुसार छिड़काव को 15 दिन के अन्तर से दोहरावें।

श्याम वर्ण (एन्थ्रेक्नोज)

इस रोग के प्रकोप से फलों एवं पत्तियों पर गहरे भूरे से काले रंग के धब्बे बन जाते हैं। रोग ग्रसित भाग मुरझा कर सूखने लगते हैं तथा फल सख्त हो जाते हैं।

रोग की रोकथाम के लिये मैन्कोजेब 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल को छिड़कें।

छाछ्या (पाउडरी मिल्ड्यू)

रोग ग्रसित बेलों पर सफेद चूर्णी धब्बे दिखाई देते हैं रोग्रसित पत्तियों एवं फलों की बढ़वार रूक जाती है और बाद में सूख जाते हैं।

नियन्त्रण हेतु केराथियॉन एल सी 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के घोल का छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें। ■